International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 5; September 2018; Page No. 47-49

छायावादी काव्य में भाषा–शिल्प का निरूपण

डॉ० कंचनलता सिंह
प्रोफेसर, स्वतंत्र गर्ल्स डिग्री कालेज, लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश
काव्य का एक पक्ष है अनुभूति दूसरा है अभिव्यक्ति। दूसरे शब्दों में इसे शब्द पक्ष और शैली पक्ष भी कहा जाता है। विचारों और भावों का उदात्त होना तो श्रेष्ठ काव्य के लिए अनिवार्य है कि किन्तु भाषा शिल्प की कामनीयता तो भी नकारा नहीं जा सकता। हमारे भाव संवेदना प्रेषणीकरण अभिव्यंजना पर ही निर्भर है। छायावाद का केवल अंतरंग ही गरिमामय नहीं है। उसका बहिरंग भी उतना ही आकर्षक और दृष्टव्य है। छायावाद की शिल्प विशेषताओं को देखकर ही आचार्य शुक्ल जी ने उसे अभिव्यंजना की एक शैली मात्र कह दिया था जबकि छायावाद में कथ्य की सशक्तता भी है और शिल्पगत् वैशिष्ट्य ही।

मूल शब्द : काव्य भाषा, काव्योचित गुण, मानवीकरण प्रकृति, अभिव्यंजना, स्वछंदता।

प्रस्तावना
भाषा ही हमारे भावों को मुखरित करती है इसलिये भाषा को भावों की अनुगामिनी होना आवश्यक माना गया है। हमारे अनुभूतियों एवं संवेदनाओं का बाह्य प्रकृतिकरण भाषा शिल्प पर ही निर्भर है। अभिव्यक्ति जितनी ललित, मधुर सहज, सहज, स्पष्ट एवं नवींन होगी, काव्य का आकर्षक उतनी ही बढ़ जायेगा। सुन्दर भाव चित्रों का उभार, सौन्दर्य सर्जन और रसात्मक अनुभूति अनुकूल काव्य भाषा द्वारा ही संभव है।
काव्य भाषा में शाब्दिक अर्थ ही पर्याय नहीं है। वह रागात्मक, लयात्मक, सूक्ष्म भाव ग्रहणी प्रतीकात्मक, लाक्षणिक, व्यंजनात्मक और कलात्मक होती है। इसी कारण कवि के सुन्दर भाव जगत को वाणी के परिधान में रमणीयता के साथ व्यक्त करती है। अभिप्राय यह है कि कथ्य और शिल्प दोनों ही श्रेष्ठ काव्य के लिए अनिवार्य है। शिल्प व्यंजक है और कथ्य व्यंग्य। शिल्प अल्प काव्य को रूपायित कर उसे सर्थकता प्रदान करता है। अतः जिस काव्य में शिल्प–कश्य को अधिक बोधगम्य और सम्प्रेषणीय कहा गया हो वह काव्य उतना ही श्रेष्ठ होता है, छायावादी काव्य में यह ही विशेषता है। छायावाद में एक ओर उदात्त विषय वस्तु का भावात्मक स्तर पर निरूपण हुआ है दूसरी ओर शैली शिल्प का भव्य स्वरूप ही उतना ही स्तुत्य बन पड़ा है।

शोध का उद्देश्य
इस शोधपत्र का उद्देय मुख्य रूप से छायावाद की विशिष्टताओं को रेखांकित करते हुए, इस काल के कवियों की भीतरी व्याकुलता को नवींन भाषा शैली के अन्तर्गत अभिव्यक्त करना का प्रयास है।

शोध का महत्व
इस शोध पत्र का महत्व इस बात से है कि छायावाद एक गीति काव्य काव्य के रूप में प्रेम और सौन्दर्य को अंकित करने का परिणाम है। नैतिकता, रूढ़िवाद, सामंती साम्राज्य और बंधनों के प्रति विद्रोह का एक रूप है।

शोध प्रविधि
इस शोध पत्र में मानवतावादी दृष्टिकोण को रस, छंद, ताल और तुक के द्वारा भाव्यता के साथ प्रस्तुत करने के लिए काव्यात्मक, गुणात्मक, टिप्पणी तथा विवरणात्मक ढ़ंग से प्रस्तुत करने का प्रयास हुआ है।

विवेचना
छायावाद में स्वछंद काव्य भाषा का वह रूप अनिवार्यता दिखलाई देता है जिसमें प्रतीकात्मकता, मधुरता, संगीतात्मकता, अनुभूति की तीव्रता और कोमल–कांत पदावली का अपना वैशिष्ट्य है। जीवन की विविधमुखी परिस्थितियों और युगीन चेतना के अनुसार शब्द चयन, छंद–गठन, वाक्य–विन्यास आदि में परिवर्तन होता रहता है। छायावादी काव्य भी इसका अपवाद नहीं है। निराला जैसे समर्थ कवि का भाषा शिल्प एक ओर संगीत आदि की दृष्टि से शास्त्रीय काव्य भाषा का अनुशासन लेकर चला है। दूसरी ओर उनकी स्वछंदतावादी दृष्टि के अनुरूप मुक्त छंद का प्रवर्तन करता हुआ आगे बढ़ा है।
अपने परिवेश और युग चेतना के अनुरूप ही जीवंत काव्य भाषा समकालीन जीवन प्रसंगों को व्यक्त करने के लिए नया रूप ग्रहण करती है। "एक जीवित भाषा का जीवन के साथ विकसित और परिमार्जित होते चलना स्वाभाविक है।" छायावाद में भाषा को प्रौढ़ता, गंभीरता, सुकुमारता, ओजस्विता, मधुरता, कलात्मकता और सहज सौन्दर्य मिला है। छायावाद में कवियों की स्वानुभूति, कल्पना, भावुकता आदि के अनुकूल शब्द चयन, वाक्य–विन्यास और छंदों का गठन दिखलाई देता है। भाषा भावों की अनुगामनी बनी रही है। यही छायावादी काव्य की भाषा शिल्प सम्बन्धी प्रगतिशीलता है।
द्विवेदी युग से उत्तराधिकार में छायावाद को जो काव्य भाषा मिली थी, वह गद्यवत् नीरस और कर्कश थी। न उसमें लालित्य था न संगीतात्मकता और न अभिव्यंजना शक्ति। भाषा की आंतरिक कोमलता और शब्द शक्तियों का परिचय देते हुए, सौन्दर्योपासक छायावादी कवियों ने उन्मेष के साथ ही नवींन भाषा शैली और अलंकरण से बहिरंग सुन्दरता की ओर पर्याप्त ध्यान दिया।
भाषा की दृष्टि से भारतेन्दु युग अव्यवस्था, शैथिल्य और काव्योचित् गुणों से विहीन ही कहा जायेगा। फिर भी उनकी यह चेष्टा बहुत श्लाध्य है। उन्होंने निज भाषा को पहचान कर नये विषय छंद और नूतन दृष्टि प्रदान की। भाषा का वास्तविक परिष्कार द्विवेदीयुग में

हुआ। द्विवेदी युग की भाषा इतिवृत्तात्मक, अभिधात्मक रही है। जबकि छायावादी काव्य भाषा के लिए स्वानुभूति–व्यंजक सूक्ष्मात्मभिव्यंजना शैली की आवश्यकता थी। भाषा निर्माण और विकास की दृष्टि से द्विवेदी युग के मूल्यवान प्रदेय को अस्वीकृत नहीं किया जा सकता। उस समय काव्य भाषा का विकास अवश्य हुआ किन्तु उस व्यापकता की गहराई, सूक्ष्मातिसूक्ष्म अभिव्यंजना के श्रेय तो छायावाद को ही दिया जायेगा। मैथिलीशरण गुप्त की परवर्ती काव्य रचनायें, राम नरेश त्रिपाठी, मुकुटधर पाण्डेय और माखनलाल चतुर्वेदी की कई कवितायें स्वछंद काव्य भाषा का पूरा परिचय देती हैं। सरसता, सूक्ष्मा, स्वछंदता, हार्दिकता आदि की दृष्टि से राम नरेश त्रिपाठी की रचनायें स्पष्टतः द्विवेदी युग और छायावाद के छंद–स्थल है किन्तु यह निर्विवाद है कि छायावादी कवि चतुष्ट्य ने ही खड़ी बोली को विकास की चरम् सीमा तक पहुँचाया। अन्य कवि उन्हीं से प्रभावित रहे।

छायावाद में नूतन भावों के उन्मेष और उद्दाम वेग के साथ नवींन भाषा शैली के हमें दर्शन हुए। इस अनुभूतिमय् आत्म–स्पर्श ने खड़ी बोली का आकर्षण बढ़ा दिया। छायावाद ने नये छंद बंधों में सूक्ष्म सौन्दर्य की अनुभूति को जो रूप देना चाहा, वह खड़ी बोली की सात्विक कठोरता नहीं सह सकता था। चित्रात्मकता या बिम्ब विधान छायावादी शिल्प की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। छायावादी कवियों की संश्लिष्ट बिम्ब योजना अत्यंत स्पृहणीय है। मूर्त का अमूर्त चित्रण और अमूर्त का मूर्त चिंतन इन कवियों की सहज विशेषता है। बिम्ब के लिये कल्पना, बुद्धि और राग तीनों का संयोग आवश्यक माना गया है जो छायावाद में विद्यमान है।

नाद सौन्दर्य या ध्वनात्मकता छायावाद की अप्रतीम विशेषता है। नाद व्यंजना द्वारा शब्दों की ध्वनि से वर्ण–विषय का रूप रंग खड़ा कर दिया जाता है। छायावादी शब्द शिल्पियों ने ध्वनात्मकता पर विशेष ध्यान केन्द्रीत किया।

छायावादी कवियों का प्रत्येक शब्द कटा–छंदा और ध्वनि युक्त है। भाषा के स्वस्वरता को उन्होंने अंतरंग अभिव्यंजना का एक प्रबल माध्यम है – प्रतीक पद्धति। इन प्रतीकों से छायावादी काव्य में भाषा की शक्ति बहुत निखरी, अर्थ गंभीर्य बढ़ा, कवि की व्यापक और सूक्ष्म दृष्टि का परिचय मिला। रचनाओं में विलक्षता के साथ ही कवि की समाहार शक्ति में वृद्धि हुई। प्रसाद और महादेवी ने यह प्रतीक बहुलता दृष्टव्य है। महादेवी ने सूक्ष्म संवेदन और अतिन्द्रिय अनुभूति के प्रकाशनार्थ आध्यात्मिक प्रतीकों को अपनाया। प्रसाद का आँसू तो प्रतीकों से भरा पड़ा है, जो नीचे की पंक्ति में दृष्टव्य है –

"झंझा झकोर गर्जन था,
बिजली सी नीरद माला,
पाकर इस शून्य हृदय को,
सबने आ डेरा डाला।"

वास्तव में छायावादी अभिव्यंजना अपनी प्रतीकात्मकता में बहुत समृद्ध है। छायावादी काव्य में अभिधा की अपेक्षा लाक्षणिकता और व्यंजना को अधिक महत्व मिला है। लाक्षणिकता के द्वारा अर्थ झंकृत उत्पन्न करन की ओर विशेष ध्यान दिया गया है। लाक्षणिकता का अनूठा सौन्दर्य छायावाद में अद्योपांत भरा पड़ा है।

नवींन उपमानों और रूपकों से छायावाद की अभिव्यंजना शक्ति में अभिवृद्धि हुई है। सभी छायावादी कवियों ने उपमानों के रूप, गुण, धर्म आदि के द्वारा उपमेयों के सफल सांकेतिक चित्र अंकित किये हैं।

सांग रूपकों का सुन्दर निर्वाह महादेवी में विशेष रूप से हुआ है। उन्होंने रमणीय और नवींन उत्भावनाओं द्वारा सुन्दर कल्पना छवियों का सुन्दर निर्माण किया है। छायावादी काव्य की एक अन्यतम् विशेषता है – मानवीकरण प्रकृति एक चेतना सत्ता है। अतः इन कवियों ने उसे भी मानव रूप प्रदान किया है। प्रकृति के उपादानों का सुन्दर मानवीकरण करते हुए प्रसाद जी ने स्वस्थ श्रृंगार, माधुर्य, सौकुमार्य और अपनी सहज रागात्मक वृत्ति का परिचय दिया है। उनका लाज भरा मौन सौन्दर्य सचेतन प्रकृति में मुखर हो उठा है। निराला का 'संध्या–सुन्दरी' तो अविस्मरणीय है। संध्या का मानवीकरण करते हुए कवि ने उसे सुन्दरी व परी के रूप में चित्रित किया है। महादेवी ने बसंत–रजनी को धीरे–धीरे क्षितिज उतरती हुई एक नारी का रूप देकर उसके अनूठे सौन्दर्य को अंकित किया है। हम कह सकते है कि मानवीकरण के सहस्रों चित्र छायावाद की अप्रतिम निधि है।

छायावादी अभिव्यंजना पद्धति में विशेषण विषय का प्रयोग बहुत महत्वपूर्ण और अर्थ गर्भिक बन पड़ा है। इस अलंकार के प्रयोग से भाव ग्रहण करने में सहायता मिलती है। सभी छायावादी कवियों ने इस अलंकार के प्रयोग की प्रवृत्ति दिखाई पड़ती है।

छायावादी अभिव्यंजना की सामर्थ्य ने हिन्दी साहित्य को विश्व साहित्य के स्तर पर पहुँचाया। केवल उसके अनुभूति पक्ष ने नहीं। काव्य रूप और छन्द विन्यास दोनों की दृष्टि से छायावादी हिन्दी काव्य साहित्य का बहुत सम्बल अध्याय है। निराला ने बंधनमय् छन्दों की छोटी राह त्याग कर अपनी स्वछंदतावादी प्रवृत्ति के अनुसार हृदयागारों को पूर्णतः व्यक्त करने हेतु मुक्त छंद का प्रवर्तन किया है।

छायावादी कवियों ने शब्दों की ध्वनि, लय और आंतरिक संग्रहीयता को पहचाना। भाषा की अभिव्यंजना शान्ति को निखारकर मुक्तछन्द द्वारा सूक्ष्म भावनाओं का उन्मुक्त प्रकाशन किया। छायावाद का सारा भाव–स्पंदन प्रगीत काव्य में निहित है। प्रसाद की कामायनी भले ही एक प्रबन्ध काव्य है किन्तु उसमें प्रगीत भावनाओं का ही प्रधान्य है। निराला ने तो लघु और दीर्घ प्रगीतों में ही अपनी पूरी काव्य साधना की है। पंत और महादेवी ने भाषा में रागात्मक आकर्षक एवं संगीत तत्व की साधना पर बल दिया।

यह निर्विवाद है कि छायावादी कवि शब्दों के सच्चे पारखी और शब्द शिल्पी है। छायावाद के चारों कवियों में निराला को छोड़कर शेष तीनों में सर्वत्र अपने–अपने ढ़ंग के प्रायः एक से शब्दों का संकल्प मिलता है। केवल निराला में शब्द–चयन की प्रक्रिया विधिवत् और अनिश्चित है।

बहुत छायावादी काव्य भाषा में क्लिष्टता और अस्पष्टता का आरोप किया जाता है। विशेषकर निराला के काव्य में दुरूहता की बात उठाई जाती है, जिसका कारण है उनकी संस्कृत निष्ठ सामाजिक पदावली। निराला की यह शैली उनकी अभिव्यंजना की प्रौढ़ता ही सिद्ध करती है। प्रसाद और पंत की भाषा में भी संस्कृत के तत्सम् शब्दों का प्रयोग बहुत है।

जहाँ तक छायावाद के अलंकृत संगीत का प्रश्न है वहाँ हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि भाषा की समृद्धि और भावोत्कर्ष में सहायक अलंकारों का सहज समावेश छायावाद में है।

निष्कर्ष

छायावादी काव्य के भाषा–शिल्प में सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रगतिशील यथार्थवादी काव्य–भाषा के समस्त सूत्र छायावादी काव्य–भाषा में सन्निहित हैं। "छायावादी युग में जहाँ काव्य भाषा की परिनिष्ठता, वैभव की आकांक्षिणी रही, वहीं उत्तरकाल में पोषक कवियों की धारणायें कुछ परिवर्तित हो चली और भाषा का जन–भाषायी रूप अधिक गहन हो चला। "

प्रगतिशील काव्य भाषा के लिए यह आवश्यक माना गया है कि

उसमें सामाजिक यथार्थ को अपनाकर जनता के हृदय पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालने के लिए अनालंकृत और सरला भाषा प्रयुक्त की जायें। उसमें लोकगीतों के आधार पर जनमन के भावों को सुबोध शैली में व्यक्त किया जाये। वह समाज के दलित और शोषित श्रमित वर्ग की विषमता, दरिद्रता, असहायता और दुर्दशा को चित्रित करने वाली काव्य–भाषा है। जिसमें सशक्त क्रान्तिकारी, विद्रोहात्मक और उद्‌बोधन गीत लिखें जा सकें। इस तरह प्रगतिशील काव्य भाषा में शोषित के प्रति, शोषणों के प्रति आक्रोश और व्यंग्यदंश तथा नारी व प्रेम की प्रकृत स्वतंत्रता अभिव्यक्त करने वाली जनभाषा का आग्रह स्पष्टतः दिखलाई देता है। क्या निराला और पंत की रचनायें उपर्युक्त तथ्यों का सफल निर्वाह नहीं करती? क्या छायावादी कवि ने हिन्दी–उर्दू फारसी मिश्रित जनभाषा का प्रयोग नहीं किया? अंततः यह स्पष्ट है कि छायावादी भाषा–शिल्प से ही प्रगतिशील काव्य भाषा का यथार्थवादी ढ़ांचा उद्‌धृत हुआ है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. सुमित्रानन्दन पंत – पल्लव (प्रवेश)
2. डॉ0 शोभनाथ यादव – कवियित्री महादेवी वर्मा
3. महोदेवी वर्मा – क्षणदा
4. जयशंकर प्रसाद – काव्य और कला तथा अन्य निबंध
5. डॉ0 रामकुमार सिंह – आधुनिक हिन्दी काव्यभाषा
6. महादेवी वर्मा – आधुनिक कवि
7. सुमित्रा नन्दनपंत – गुंजन
8. डॉ0 भगीरथ मिश्र – निराला काव्य का अध्ययन
9. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला – अपरा
10. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला – परिमल
11. जयशंकर प्रसाद – आंसू
12. महादेवी वर्मा – दीपशिखा
13. महादेवी वर्मा – यात्रा
14. जयशंकर प्रसाद – लहर
15. सुमित्रा नंदन पंत – रश्मिबन्ध
16. गंगा प्रसाद पाण्डेय, रामनारायण लाल – छायावाद और रहस्यवाद
17. डॉ0 द्वारिका प्रसाद – कामायनी में काव्य संस्कृति और दर्शन
18. श्री चन्द्र जैन – काव्य में पादप–पुष्प